भाव निर्झरिणी

हम चाहते हैं :
आत्मानन्द का प्रसार,
भक्ति ज्ञान का विहार,
जीव मात्र का उद्धार,
शान्ति एक्य का प्रचार।

आनन्द घन

❄ एक रक्खे टेक ❄

एक मत	–	सब मतों का सार है ।
एक होना	–	संशय भय नाशक है ।
एक काम	–	अकाम का मर्म समझता है ।
एक गीत	–	सुख दुःख के गीत भुलाता है ।
एक क्या	–	वही ।
एक क्यों ?	–	एक रक्खे टेक ।
एक ही	–	और क्या ?
एक भी	–	सुनो – करो ।
एक पत्र	–	अत्र, तत्र, सर्वत्र रक्षा करता है ।
एक माला	–	ठाकुर को रिझाती ।
एक जप	–	मानसिक ताप को दूर करता है ।
एक चित्त	–	सच्चिदानन्द का रूप बन जाता है ।

दो शब्द सुना जा,बड़े प्यारे हैं । “मैं तेरा हूँ ”।

कृष्ण – अर्जुन

मुख कृष्ण	–	कर्ण अर्जुन।
प्रेम कृष्ण	–	प्रेमी अर्जुन।
ज्ञान कृष्ण	–	ध्यान अर्जुन।
पूर्ण कृष्ण	–	अभाव अर्जुन।
रस कृष्ण	–	लीन अर्जुन।
नारायण कृष्ण	–	नर अर्जुन।
ज्ञाता कृष्ण	–	ध्याता अर्जुन।
गुरु कृष्ण	–	शिष्य अर्जुन।
आनन्द कृष्ण	–	उपासक अर्जुन।
भगवान कृष्ण	–	भक्त अर्जुन।
बाबा कृष्ण	–	बनासा अर्जुन।
मैं कृष्ण	–	तू अर्जुन।
सिन्धु कृष्ण	–	बिन्दु अर्जुन।
गीत कृष्ण	–	तान अर्जुन।
प्राण कृष्ण	–	वाणी अर्जुन।
रूप कृष्ण	–	अनुरूप अर्जुन।
कवि कृष्ण	–	काव्य अर्जुन।
रवि कृष्ण	–	किरण अर्जुन।

सोम कृष्ण	–	अमृत अर्जुन।
मान कृष्ण	–	अभिमान अर्जुन।
पुरूष कृष्ण	–	प्रकृति अर्जुन।
वाह कृष्ण	–	आह अर्जुन।
बीज कृष्ण	–	वृक्ष अर्जुन।
हृदय कृष्ण	–	हाथ अर्जुन।
प्रारब्ध कृष्ण	–	पुरुषार्थ अर्जुन।
अ कृष्ण	–	क अर्जुन।
स्थिति कृष्ण	–	गति अर्जुन।
निवृति कृष्ण	–	प्रवृति अर्जुन।
हास कृष्ण	–	विलास अर्जुन।
शुक्ल कृष्ण	–	कृष्ण (पक्ष) अर्जुन।
हरि कृष्ण	–	हर अर्जुन।
व्योम कृष्ण	–	वायु अर्जुन।
आज कृष्ण	–	कल अर्जुन।
रास कृष्ण	–	नृत्य अर्जुन।
भाव कृष्ण	–	भाषा अर्जुन।
माला कृष्ण	–	पुष्प अर्जुन।
आदि कृष्ण	–	अनन्त अर्जुन।

....2

सूरज को क्या दीप दिखाएँ ?

जो सद्‌गुणों की खान है ।
शोभामय सुखधाम है ।।
भवसागर की तरणि का ।
पतवार जिसका नाम है ।।
उसकी क्या क्या बात बताएँ ।
सूरज को क्या दीप दिखाएँ ।।१।।

चारू चरित चिंतन जिसका ।
स्वर्ग का सोपान है ।।
साहित्य में भरा हुआ ।
महात्म्य का बखान है ।।
उसके क्या क्या कार्य गिनाएँ ।
सूरज को क्या दीप दिखाएँ ।।२।।

परम कृपा पाकर जिसकी ।
होते पूरण सब काम है ।।
भय भ्रान्ति–भीरुता भगती ।
मिलता मन को विश्राम है ।।
उसकी क्या–क्या महिमा गाएँ ।
सूरज को क्या दीप दिखाएँ ।।३।।

जिसके तेज से है हो रहा ।
निखिल ब्रह्माण्ड–भू आलोकित ।।
चर–अचर में रमा हुआ ।
कर रहा जो सब संचारित ।।
उसके क्या–क्या पार हम पाएँ ।
सूरज को क्या दीप दिखाएँ ।। ४।।

जिसके मधुर नाद से ।
झंकृत सब तान है ।।
संगीत से सराबोर ।
हो रहा जहान है ।।
उसको क्या–क्या गान सुनाएँ ।
सूरज को क्या दीप दिखाएँ।।५।।